ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

हिंदी गझल में प्रेमाभिव्यक्ति गजल

प्रा . डॉ . विजया जगन्नाथ पिंजारी शिंदे
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय , पाचवड
ता . वाई , जि . सातारा पिन – ४१२८०१
फोन - ९ ८८१६२५८७९
मेल- vijayapinjari@gmail.com

आरबी भाषा का शब्द है। जिसका शाब्दिक अर्थ है "प्रेमिका से वार्तालापा" गजल मूलतः एक ऐसी काव्य-विधा है जिसका केंद्रीय विषय है - 'प्रेम'

सरदार मुजावर के अनुसार गजल शब्द आरबी भाषा के 'गजला' शब्द से गजल शब्द बना है। 'गजला' का अर्थ है हिरन। हिरन का जो छोटा बच्चा होता है उसे 'गजला' कहा जाता है। अर्थात 'गजला' इस शब्द में ही एक तरह की खुबसूरती और नजाकत भरी हुई है। इसीलिए शायद नाजुक भावों को अभिव्यक्त करनेवाली इस विधा को 'गजल' नामसे अभिहित किया गया होगा।

'हिंदी साहित्य कोश' में गजल के बारे में लिखा है। "गजल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है। गजल का शाब्दिक अर्थ है नारियों के प्रेम की बातें करना" 'उर्दू हिंदी शब्दकोश' के अनुसार "प्रेमिका से वार्तालाप उर्दू फारसी कविता का एक प्रकार जिसमें प्राय: ५ से ११ शेर होते है। सारे शेर एक ही रदीफ और काफिए में होते है। हर शेर का मज्मुन अलग होता है। पहला शेर मत्ला कहलाता है!"

'उर्दू मराठी शब्दकोश' की दृष्टी से गजल का अर्थ है, "प्रियतमेशी प्रीतीच्या व जीवनाच्या गोष्टी बोलणे प्रेमपात्राशी गुजगोष्टी करणे व खेळणे" उर्दू - फारसी कवितेचां एक प्रकार इस प्रकार कोशों में गजल को "श्रृंगार रस की कविता" मुक्तक काव्य का भेद, जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है, "नारियों से प्रेम की बातें करना, 'प्रियतमा से इश्क और हुस्नकी गुफ्तगू करना" , 'इश्को - मोहब्बत का जिक्र', 'प्रेम और शराब का वर्णन' , प्रेमगीत आदि माना जाता है।

गजल मूलतः एक ऐसा काव्य प्रकार है जिसका केन्द्रीय विषय प्रेम है। गजल को प्रेम की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना जाता है। प्रेम अपने - आप में अत्यंत व्यापक भाव है।

हिंदी गझलों में प्रेमाभिव्यक्ति

हिंदी गझलों में प्रेमाभिव्यक्ति का वर्णन अवश्य हुआ है, लेकिन हिंदी गझलकारों ने गझल में सामाजिकता को अधिक उभारा है। जीन जीन गझालकारों में प्रेम-भाव गजल में प्रस्तुत किये है वह भी बहुत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किये है। सन १९६० के बाद काव्य में प्रेम और शृंगार को अपेक्षाकृत कम स्थान प्राप्त हुआ है। इस समय गझलों में प्रेम - भाव का निरूपन अपेक्षाकृत कम नजर आता है। यहाँ यह बात ध्यान में रखना आवश्यक है कि फारसी और उर्दू गजलों में जिस प्रेम और शृंगार को मूल कथ्य माना गया था। उसे साठोतरी गझलकार पूर्णत: नजरअंदाज नहीं कर सके एवं मानव जीवन की इस केंद्रीय भावना को उन्होंने गजलों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। लैकिक एवं अलौकिक प्रेम का वर्णन उन्होंने अपनी गजलों में किया है।

लौकिक प्रेमका निरूपण

हिंदी गजलकारों ने अलौकिक प्रेम की अपेक्षा लौकिक प्रेम का ही चित्रण अधिक किया है। प्रेम के दो पक्ष है संयोग पक्ष और वियोग पक्ष साठोत्तरी हिंदी गजलकारों ने इन दोनों पक्षों का निरूपण अपनी गजलों में किया है। व्यक्ति का जीवन दु:खमय अधिक है। जिसकी अनुभूति रचनाकार को नहीं है। इसकी अभिव्यक्ति वह कैसे कर सकता है। अत एवं हिंदी गजलों में संयोग पक्ष के बहुत कम चित्र दिखाई देते है। किन्तु कुछ ऐसे गजलकार भी है जिन्होंने संयोग की अनुभूति के आधार पर अपनी गजलों में कुछ शेर कहे है। जब कोई किसी के प्रति आकर्षित होता है , तब वह व्यक्ति उसके सानिध्य में ही आनंदानुभूति के प्रत्येक क्षण व्यतित करना चाहता है। प्रिय के बीना उसे चैन नहीं मिलता है, जीवन बेमानी लगता है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

"जब से नजरों में कोई समाया लगा
मैं भी अपने को कितना पराया लगा।
जिंदगी की चिलकती कडी धूप में
जब खयाल आया उनका तो साया लगा।"

प्रेम समर्पण है। प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने के लिए तयार रहता है। इस समर्पण में उसे आनंद की अनुभूति होती है। बलवीर सिंह ' रंग ' की गजल में यही भाव परिलक्षित होता है।

"सारा जीवन गवाया तुम्हारे लिये
तुमको अपना बनाया तुम्हारे लिये
चाहे मानो न मानो तुम्हारी खुशी
रंगमहफिल में आया तुम्हारे लिये।"

साठोत्तर हिंदी गजल के प्रमुख हस्ताक्षर दुषान्तकुमार की गजलों में प्रेम का निरूपण हुआ है। कही-कही प्रेम का चित्रण आवश्य हैं कवि अपनी प्रिया के सौंदर्य को सात्विक वृत्ती से पाना चाहता है। वह उस सौंदर्य को छुना नहीं चाहता, अपितु प्रिया के रूप सौंदर्य को निहारने में ही आनंद की अनुभूति में उसका मन अतृप्त ही बना रहता है।

"तुमको निहारता हूँ सुबह से ऋतंम्बरा,
अब शाम हो गयी है लेकिन मन नहीं भरा।"

दुषान्तकुमार बासना गंदी गलियों में कविता को भटकाकर भ्रष्ट करना उचित नहीं समझते, इसलिए इससे वे सदा दूर ही रह हे। सात्विक प्रेम का चित्रण करते हुए वे लिखते है।

"चांदनी छत पे चल रही होगी
अब अकेली टहल रही होगी।"

प्रिय के मिलन से पूर्व दिल में तरह-तरह के जज्बात आते रहते है। कल्पना में तो कहकहे लगते है, लेकिन वो पास आ जाये वो जुबान खामोश तो जाती है। कुछ कहने के लिए दिल मचलता रहता है, किंतु बात जुबा तक आ नहीं पाती। जिनकी याद आयी तो गीत आपनेआप उमड चलते थे, उनके स्वागत में क्या गुजरा कि गाया न गया।

शृंगार में प्रिय के सौंदर्य को विशेष महत्व है। आलंबन के सौंदर्य का सुक्ष्मतासे वित्रण किया है। काली जुल्फों के लिए अँधेरी रात को उपमान बनाना बहुत पहले से चला आ रहा है। हिंदी गजलकार गौतम ' अजीज ' ने भी इसका प्रयोग किया है।

"उसके चेहरे पे जहाँ जुल्फ बिखर आयी है।
आसमानों से वही रात उतर आयी है।

वियोग शृंगार का वर्णन हिंदी गझलों में अधिक हुआ है। वियोगावस्था में प्रिय की स्मृति जीवन का आधार और पाथेय बन जाती है। विरह प्रिय की स्मृतियों में जिस-दिन आकुल-व्याकुल रहता है। यह स्मृतियाँ कभी उसे रुलाती है , तो कभी उसे हँसाती है। कभी वह प्रिय की निष्ठुरता पर दुखी होती है।

"जब तेरी याद ने सीने से लगाया मुझको
याद आकार भी कोई याद न आया मुझको।
प्यार के खत की तरह तुमने लिखाया मुझको
फिर क्यों शमा पै पतंगे- सा जलाया मुझको ।।"

Copyright © 2020 Authors

प्रियतमा की याद में प्रेमी का दिल सुलगता रहता है। आँसू लगातार बहने लगते है। डॉ. कुंअर बेचेन ने भावों को अभिव्यक्त करते हुए यादों को समुंदर की लहरें कहा है।

"तेरी यादों में सुलगता रहा दिल चंदन-सा
जब पिये अश्क, लगा शहद की बूंदे पी है।
आदी है . मुझको भिगोती है, चली जाती है ,
उसकी यादे भी समुंदर की तरंगों - सी है।"

ओंकार गुलशन ने अपनी गझल में विरह इस प्रकार प्रकट किया है। किसी की याद सताने पर आंसू बहाने के अलावा क्या शेष रहा है, दिन तो बीत जाता है किंतु शाम होते ही याद पुनः मंडराने लगती है। शाम के साथ-साथ यार्दे भी धीरे-धीरे पास आने लगती है, जिससे गम और बढ़ जाता है। इस बात को ओंकार गुलशन ने अपनी गझल में इस तरह अभिव्यक्त किया है।

"साँझ ढले जब सन्नाटा मेरे घर का मेहमान हुआ।
तेरी यादों का मेरी तनहाई पर अहसान हुआ
कैसे-कैसे दिन दिखलाए मुझको तेरी चाहत ने,
मैं अपनी बस्ती में अपने लोगों से अनजान हुआ।"

स्मृतियों का स्वभाव है कि वे प्रिय को सताती रहती है। प्रिय की स्मृति से तन - मन की जो अवस्था होती है। उसकी सटीक अभिव्यक्ति मृदुला अरूण की गजल में हुई है.

"याद तेरी जब भी आ जाती है मेरे हमनवा ,
फुटने लगता है कुछ तन - मन में छालों की तरह।"

अलौकिक प्रेम का निरूपण

हिंदी गजलकारों ने लौकिक प्रेम के साथ अलौकिक प्रेम का भी निरूपण किया है। जिस प्रेम का आलंबन अपार्थिव या अलौकिक हो, वह प्रेम अलौकिक कहलाता है। आत्मा का परमात्मा के प्रति प्रेम अलौकिक ही है। जिसे इश्क-ए-हकीकी कहा गया है। हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन एवं छायावादी कवियों की तरह हिंदी गजलकारों ने भी परब्रहम अर्थात परमसत्ता के प्रति अपनी जिज्ञासाको व्यक्त किया है। सरस्वती कुमार की एक गजल में इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति हुई है।

"कौन, नभ के दीप दमका कर गया।
कौन, तम का रूपचमका कर गया।
मैं उलझ और थक कर सो गया।
उलझनों को कौन सुलझा कर गया।
कल्पना की कुसुम काया कलान्त थी।
हृदय-उप वन कौन महका कर गया।
ओप वन कौन महका कर गया।
जो कि मेरे द्वार तक आ कर गया।
कौन किरणों केकरों की घात से।
लहरियों के तार झनकाकर गया।"

जहरी कुरेशी ने कहा है जीवात्मा परमात्मा से मिलन के लिए व्याकुल वो रहती है , किंतु मिल नहीं पाती क्योंकी साधना का मार्ग कठिन साधना मार्ग की सबसे बड़ी रूकावट है - मोहमाया के बंधन ये बंधन आसानी से नहीं टुटते।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

"हम आत्मा से मिलने को व्याकुल रहे , मगर ,
बाधा बने हुए है ये रिश्ते शरिर के।"

इश्वरीय प्रेम को प्राप्त करने की एक ही शर्त है कि 'अहं' को विसर्जित किया जाये। मोह- माया के बंधन को तोडकर कोई भी साधक परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है।

इसी यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति गोपालदास 'निरज' की निम्नलिखित पंक्तियों में दी गई है

"वे न ज्ञानी, न वो ध्यानी, न बिरहमन, नवो शेख
वो कोई और थे जो तेरे मकां तक पहुँचे।
सदियाँ-सदीयाँ न वहाँ पहुँचेगी दुनिया सारी
एक ही घूट में मस्ताने जहाँ तक पहुंचे।"

ये दुनिया एक सराय की तरह है, जहाँ कुछ पल के लिए मुसाफिर रूकते है और चले जाते है। अज्ञानता के कारण हम इस दुनिया को ही अपना घर समझाते है। जैसे - जैसे ज्ञान प्राप्त होने लगता है तब हमारा मैं मुसाफिर है और हम यहाँ - वहाँ दिशाहिन भटकते रहते है। इन भावों की अभिव्यक्ति करते हुए गोपालदास सक्सेना - ' निरज ' अपनी एक गझल में लिखते हैं।

सराया थी जो उसे मैंने अपना घर समझा।
यही हसीन भरम मेरा कैदखाना था।
हर एक शख्स मूसाफिर था इस जगह लेकिन
पता किसी को नहीं था कहाँ पे जाना था!"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है। हिंदी गझलकारों ने लौकिक प्रेम के साथ-साथ अलौकिक प्रेम का भी चित्रण किया है परंतु अलौकिक की अपेक्षा लौकिक प्रेम का चित्रण ही अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होता है। अलौकिक प्रेम के चित्रण में आत्मा की परमात्मा के मिलन की अकुलाहट, परमसत्ता के प्रति जिज्ञासा के भाव, संसार की परमात्मा मिलन की अकुलाहट, परमसत्ता के प्रति जिज्ञासा के भाव, संसार की नश्वरता, मोह-माया के बंधन आदि का मार्मिक चित्रण किया गया है। फिर भी इतना सब कुछ होने के बावजूद हिंदी गजलों को प्रेमप्रधान गजलें कहना उचित नहीं होगा। प्रेम हिंदी गझलों का अप्रधान विषय है न कि प्रधान विषय.

संदर्भ ग्रंथ :

- हिंदी गझल के विविध आयाम सरदार मुजावर , प्रथम सस्करण पृष्ट -३,४
- हिदी गझल के विविध आयाम सरदार मुजावर, प्रथम सस्करण पृष्ठ - ५
- साठोत्तर हिदी गझल -डॉ . मधु खराटे , द्वितीय सस्करण पृष्ठ २३, २८
- हिंदी की श्रेष्ठ गझले - डॉ गीरीराज शरण अग्रवाल, द्वितीय सस्करण पृष्ठ ३५, १३३, १४२,१४५
- साठोत्तर हिदी गझले आखाँ गुजर गया. प्रथम संस्करण पृष्ठ २००, २०१
- चाँदनी का दुख जहीर कुरेशी, द्वितीय सस्करण पृष्ठ १४, १५
- नवीनतम हिदी गझले डॉ रोहिताश्व, द्वितीय सस्करण पृष्ठ ५६, ९९
- रास्सियाँ पानी की डॉ कुँअर बेचैन, प्रथम सस्करण पृष्ठ १८
- सयाँ पानी की डॉ कुँअर बेचैन, प्रथम सस्करण पृष्ठ १६०

Copyright © 2020 Authors